INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS

VOLUME 2, ISSUE , 8 August , 2014

ISSN-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

अध्यापक शिक्षा की वर्तमान स्थिति

डॉ. बनवारी लाल शर्मा

एम.एससी.(रसायन),एम.ए.(इतिहास),एम.एड.(शिक्षा),

पीएचडी(शिक्षा)

शिक्षण की अवधारणा में परिवर्तन –

वर्तमान समय में प्रवशति 'अध्यापक प्रशिक्षण' को छोड़कर अध्यापक शिक्षा की ओर बढ़ी है जिसके फलस्वरूप प्रशिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों को शिक्षण का अधिक ज्ञान एवं कौशल देने से संतुष्ट नहीं है। शिक्षक एक पूरी तरह शिक्षित तथा पूर्ण विकसित मनुष्य, योग्य नागरिक और व्यावसायिक हो इसको प्रशिक्षण संस्थाओं के कार्यक्रम में जोड़ा जा रहा है। अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में जो अत्यधिक ज्ञान का विस्तार हुआ है, उसकी मांग बढ़ रही है।

अध्यापक की भागीदारी में परिवर्तन –

आज के शिक्षक को कल का आचार्य बनाना पडेगा। वह केवल ज्ञान प्रदान करने वाला ही नहीं है, उसे अधिगम का निर्देशक तथा संस्कृति का प्रचारक भी बनना है यदि शिक्षा को समाजिक परिवर्तन का शक्तिशाली उपकरण बनना है तो उस को इस परिवर्तन का कार्यकर्ता, सामाजिक अभियन्ता तथा भविष्य के समाज का शिल्पी बनना पडेगा। उस का कार्य केवल कक्षा तथा विषय तक ही सीमित नहीं है बल्कि उसे सम्पूर्ण समाज तथा सांस्कृतिक परिवर्तन का मार्गदर्शन बनना पडेगा।

विद्यालय की अवधारणा में परिवर्तन –

Please cite this Article as: *डॉ. बनवारी लाल शर्मा,* ,अध्यापक शिक्षा की वर्तमान स्थिति International Journal Of Creative Research Thoughts, Volume 2, Issue.8, August, 2014

विद्यालय की अवधारणयें प्रतिदिन बदलती जा रही है। प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से विद्यालय को अपने तथा आम समुदाय के बीच अन्तः प्रक्रिया बनाये रखनी आवश्यक होगी ताकि वह आस–पास के वातावरण तथा स्थिति में परिवर्तन ला सके।

अध्यापक–शिक्षण में परिवर्तन –

अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम इतना लचीला होना चाहिए कि वह साधारण तथा सृजनात्मक शिक्षक, दोनों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। वास्तव में सभी शिक्षकों से कक्षा में सृजनात्मक कार्य करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती आज कक्षाओं में भीड़ बढ़ती जा रही है किन्तु समाज के विभिन्न स्तरों से बहुआयामी योग्यता वाले शिक्षकों को खोज निकालना होगा। अध्यापक शिक्षण कार्यक्रमों में विविधता लानी होगी। अभिवृत्तियों तथा कौशलों के विकास पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए, क्योंकि इनके विकास में उद्देश्यपूर्ण अभ्यास की जरूरत है। प्रशिक्षण कॉलेजों के कार्यक्रम में बहुत अधिक भीड़ है। जिससे तथ्यों का एकीभूत होने, केन्द्रित होने, सोचने, आलोचनात्मक परीक्षण तथा सैद्धान्तिकरण में समय लगता है। जैसा कि मैकनायर कमेटी रिपोर्ट में बताया गया है। प्रशिक्षण में छात्रअध्यापक को अपने कार्यक्रम समाप्त करने की जल्दी नहीं होनी चाहिए ताकि वे उसमें आत्मसात् हो जाये। शिक्षा आयोग (1964–66) की रिपोर्ट के प्रकाशन के बाद से शिक्षक के गुणों पर अत्यधिक जोर दिया जाने लगा है।

शिक्षा ही राष्ट्र को आत्मनिर्भरता, आर्थिक विकासपूर्ण रोजगार, राजनैतिक विकास, सामाजिक तथा राष्ट्रीय एकीकरण की ओर ले जा सकती है।

माध्यमिक शिक्षा में परिवर्तन –

भारत में माध्यमिक शिक्षकों की शिक्षा एक शतक से भी अधिक पुरानी है। पहले की शिक्षा का क्षेत्र सीमित था। कक्षा प्रबन्धन, श्यामपट्ट कार्य, जैसी पद्धती चलती थी। वर्तमान कार्यक्रमों पर शिक्षा मनोविज्ञान का भारी प्रभाव है। कक्षा के अन्दर तथा कक्षा और विद्यालय के बाहर शिक्षक के सभी कार्यो पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। शिक्षा के प्रसार तथा बालकों की चिन्ता के कारण, गुणात्मक सुधार आवश्य हो गया है। देश में जनतंत्र होने के कारण शिक्षकों की तैयारी में नये आयाम जुड गये है। इसलिये राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान के साथ

मिलकर इस कार्य के करने की कोशिश की है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के अध्यापक शिक्षक संघ ने विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों के साथ मिलकर इस कार्य को करने की कोशिश की है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद का यह विश्वास है कि यह उचित समय है। जबकि विश्वविद्यालयों तथा प्रशिक्षण महाविद्यालयों के कार्यक्रम के शोध द्वारा एकत्रित तथ्यों पर आधारित हो क्योंकि समस्याओं और कार्यक्रम की कमियों को स्पष्ट तौर पर पहचाना नहीं गया है। तथा इसका समाधान भी स्पष्ट नहीं है।

निष्कर्ष :–

वर्तमान में छात्र उन शिक्षकों को पसन्द करते है। जिन्हें अपने विषय पर अधिकार के साथ अन्य विषयों की भी समझ हो, जिनके विचार स्पष्ट हो तथा जो अपने कार्य में कुशल हो और छात्रों को सही तरह से दिशा निर्देश दे सके, छात्रों में रूचि ले, उनकी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान निकालने में उनका सहयोग दें मैत्रीपूर्ण स्वभाव होने के साथ–साथ वे कुछ सीमा तक कठोर भी हो तथा अपने कार्य को पूरे व्यवसायिक रूप से करे।

अध्यापक शिक्षा में कठिनाइयॉ –

वर्तमान में अध्यापक शिक्षा के प्रशिक्षण के लिए बी.एड. पाठ्यक्रम का प्रयोग किया जाने लगा है। जिसका मुख्य उद्देश्य अध्यापक प्रशिक्षण को एक परिपूर्ण अनुभव प्रदान करना तथा अध्यापन को कौशलों को विकसित करना और शिक्षकों में मूलभूत सिद्धान्तों तथा सही अभिवृत्तियों को विकसित करना है।

1. इसका कार्यक्रम बहुत अल्पसमय के लिए होता है।
2. इसमें शिक्षा की विधि पर अधिक बल दिया जाता है। विषयवस्तु के ज्ञान पर ध्यान नहीं दिया जाता।
3. इसके अन्तर्गत सिद्धांत और अभ्यास में कोई सम्बन्ध नहीं हैं।
4. इसके स्वरूप भारतीय संगठनों के अनुरूप नहीं है।
5. इसका पाठ्यक्रम व इसके प्रशिक्षण का ढंग पुराना हो चुका है।
6. यह आधुनिक शिक्षा पर आधारित नहीं है।
7. यह लोचपूर्ण नहीं है।

8. यह विद्यालयों व समाज की वास्तविक आवश्यकताओं से सम्बन्धित नहीं है।

अध्यापक शिक्षण कार्यक्रम के गुणात्मक विकास के लिए सुझाव –

1. विषय का पूर्ण नियोजित समायोजन।
2. विश्वविद्यालयों का स्नातकोतर महाविद्यालयों के सहयोग से शिक्षण के मूल तत्वों का अध्ययन करना।
3. विश्वविद्यालयों में सामान्य तथा व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रमों को आरम्भ करना।
4. शिक्षा में अनुसंधान के विकास द्वारा व्यावसायिक शिक्षा को भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप बनाना।
5. शिक्षा की तकनीक में ऐसा सुधार जिससे कि स्वअध्ययन तथा वाद–विवाद को पूरा स्थान मिल सके।
6. मूल्यांकन के तरीकों में सुधार जिससे की आन्तरिक प्रयोगात्मक कार्य का सही तरीके से मूल्यांकन करना।
7. शिक्षण अभ्यास में सुधार और इसे व्यापक कार्यक्रम बनाना। विशेष पाठ्यक्रमों तथा कार्यक्रम का विकास।
8. विकासशील शिक्षा पद्धति में शिक्षक की बहुमुखी जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए हर स्तर पर शिक्षा पाठ्यक्रम तथा कार्यक्रम में सुधार करना।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

- पी.डी.पाठक: भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, पृष्ठ- 14,15,16
- शैक्षिक मंथन: राष्ट्रीय मासिक पत्रिका, वर्ष-2,अंक-10,1मई 2010 I
- शैक्षिक मंथन:राष्ट्रीय मासिक पत्रिका, वर्ष-3 ,अंक -11,1जून2011 I
- रामनरेश त्यागी: भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएं ।
- डॉ श्रीधर मुखोपाध्याय: भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृष्ठ 41,42,43,I
- शिक्षा की चुनौती :नीति सम्बन्धी परिप्रेक्ष्य,शिक्षा-मंत्रालय, भारत सरकार, 1985 पृष्ठ 7